Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

महादेवी वर्मा जी की कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' की आलोचना तथा वर्तमान समाज में उसकी प्रासंगिकता

[1]अपर्णा तालुकदार दास ; [2]डॉ. संगीता पाठक

[1]शोधार्थी, रवीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)
[2]शोध निर्देशिका, रवीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)

सारांश

महादेवी वर्मा जी एक समाज सुधारक, कवि, गरीबों की मसीहा, अंधविश्वास, कुसंस्कार की विरोधी, एक कवयित्री, प्रकृति-प्रेमी, समाज को जोड़ने वाली, गुरु निराकार ब्रह्म को तलाश करने वाली साधिका तथा राजनैतिक नेता, स्वाधीनता आंदोलन के लिए लड़ने वाली अग्रणी नारी थी।

महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं। वे हिंदी साहित्य में सदा अमर रहेंगी। महादेवी वर्मा का जन्म क-स्त्र में फर्रुखाबाद में हुआ था। पिता गोविंद प्रसाद वर्मा लखनऊ के एक कॉलेज में प्रोफेसर थे। आपकी प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ में ही हुई। वे प्रयाग में आ गई और वहीं एम.ए. की डिग्री हासिल की। प्रयाग महिला विद्यापीठ में आपने प्राचार्य के रूप में कार्य किया। आपकी साधना सतत् काव्य की साधना रही। महादेवी वर्मा की प्रगतिशीलता केवल स्त्री संबंधी प्रश्नों तक ही सीमित नहीं थी। इसके अलावा उन्होंने तमाम सामयिक प्रश्नों की विस्तार से विवेचन कर हमारे वर्तमान समय के बारे में सोचने को मजबूर किया। महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी को बहुत नजदीक से परखा है। नारी की हर समस्या को वह अपनी समस्या मानी। महादेवी के ऐसे तमाम लेखों का बहुत बड़ा आकर्षण रचनाकार का साहसी व्यक्तित्व है। उन्होंने न जीवन में भय माना न लेखन में। उनकी निडरता ने ही उन्हें जरूरत पड़ने पर दूसरों के साथ खुद अपने खिलाफ खड़े होने की क्षमता दी। परिवार, धर्म, परंपरा, समाज, कोई भी उन्हें भयभीत नहीं कर सका।

समसामयिक समाज में महादेवी वर्मा जी की 'नीर भरी दुख की बदली' कविता अधिक मायने रखती है। वर्तमान समाज में लोगों में अपनापन, भाईचारा, विभेद, जातिवाद, धर्म आदि पर समाज की दिशा दिन ब दिन बिगड़ती जा रही हैं। इस वक्त हमेंअपने समाज में महादेवी की बदली की तरह चारों ओर बरस कर प्यार, भाईचारा का संदेश फैलाना पड़ेगा और समाज को वर्षा की बूंद-बूंद से साफ, स्वच्छ बनाने की कोशिश करनी पड़ेगी।

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी कविता में छायावाद अपनी काव्यात्मक समृद्धि आंतरिक ऊर्जा और दार्शनिक गंभीरता के लिए उल्लेखनीय है। स्वाधीनता की चेतना, आत्मवादी दृष्टि, सौंदर्य चिंतन और विद्रोह भाव के लिए इसे सदा रेखांकित किया जाएगा। महादेवी वर्मा (क-स्त्र-क-त्त्र) छायावाद की एक महत्वपूर्ण कवयित्री हैं। छायावादी काव्य में अपनी अनुभूति की सूक्ष्मता चिंतन की गंभीरता, करुणा, प्रेम रहस्य और गीतात्मक चेतना के कारण महादेवी एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्राप्त करती है। उनकी कविता नीहार (क-प ई), रश्मि (क-फ्ष ई), नीरजा (क-फ्ब ई), सांध्यगीत (क-फ्म ई.), दीपशिखा (क-ब्ब ई.) तथा अग्निरेखा संग्रहों में पाठकों के सामने हैं। महादेवी ने मात्रा में बहुत अधिक नहीं लिखा है, पर अनुभूति और कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से उनका काव्य छायावाद की मूल्यवान उपलबध है। महादेवी वर्मा के काव्य में जो वेदना है, वह एक मूल्यवादी अंतमुखी कवयित्री की वेदना को अनुभव करता है, जैसा कि कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा है कि वह एक विरहिणी नारी का क्रंदन सुनता है (आमार हृदये जे आछे से गो कोन विरहिणि नारी) महादेवी वर्मा भारतीय दर्शनों से गहरे प्रभावित रही। वे लिखती हैं- 'मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं, एक वह जो मनुष्य के संवेदनशली हृदय को सारे संसार से एक अविचिन्न बंधन में बांध देता है और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है।

महादेवी जी जिस परिवार में पैदा हुई थी, उनका कभी वास्तव जीवन की वस्तुओं के लिए अभाव नहीं था। अनेक लाड़-प्यार में वह पली-बड़ी थी, परंतु फिर भी उनकी कविता में विरह का स्थान अधिक दिखाई देता है। नीर भरी दुख की बदली में कवयित्री के हृदय की क्रंदन सुनाई पड़ती है। यह क्रंदन उनकी निजी जीवन तथा ऐश्वर्य वैभव के लिए नहीं था। इस समाज के लिए था समाज में फैली अनियम, भेदभाव तथा नारी के प्रति अत्याचार। इन सभी कारणों के लिए महादेवी जी रोती थी। अपनी कविता के माध्यम से मानव जाति तथा नारी के अधिकारों के प्रति आवाज उठायी थी।

क. महादेवी वर्मा की कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' एक आलोचना तथा वर्तमान समाज में उसकी प्रासंगिकता :

'मैं नीर भरी दुख की बदली
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रांदन में आयत विश्व हंसा,
नयनों में दीपक से चलते

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पलकों में निर्झरिणी मचली।

इस कविता में महादेवी वर्मा जी ने व्यक्ति की विराट शक्तियों को स्वर प्रदान किया है। कवयित्री जी अपना करुना प्रधान व्यक्तित्व को बदली के रूप में निरूपित किया। महादेवी जी कहती है कि मेरे जीवन में दुःख का इतने व्यापक से प्रचार हुआ है कि इस विषय में सहज ही यह धारणा की जा सकती है कि मेरा जीवन पूर्ण बदली के समान है। घंटा का स्वरूप स्पंदनों से युक्त होता है, किंतु आकाश की स्थिति निस्पंदन होती है। उसी प्रकार मेरे स्पंदनशील जीवन में संपूर्ण जड़ प्रकृति समाई हुई है। जिस समय मेघ-गर्जन की ध्वनि होती है, उस समया वर्षा के अभाव में व्याकुल संपूर्ण सृष्टि में प्रसन्नता आ जाती हैं। इसी प्रकार जब कवयित्री संसार की वेदनामयी स्थिति को देखकर उसके दुख में सहानुभूति का अनुभव कर हृदय में क्रंदन करने लगती है तभ वह दुखों से पूरित दृष्टि मानो अंकित हो जाती है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में वायुमंडल में सर्वत्र जुगनुओं की व्याप्ति रहती है, उसी प्रकार कवयित्री के नयनों में भी आशा का संदेश निहित है और जुगनू रूपी दीपकों की शांति उनसे सृष्टि में सर्वत्र आलोक फैल जाता है। आकाश की घटाओं में सरिता का विशाल जल प्रवाह अंतरनिहित रहता है और उसके समान ही कवयित्री नेत्रों के पलकों में भी संवेदना के प्रभाव स्वरूप संसार की पीड़ा पर अश्रु बहाने के लिए प्रर्याप्त जल है।

मेरा पग-पग संगीत भरा
श्वासों से स्वप्न पराग झरा
नभ के नव रंग बुनते दुकूल
छाया में मलय-बयार पली।

महादेवी जी के प्रत्येक चरण की गति में संगीत भरा हुआ है। उनके स्वप्नों से प्रेरित श्वासों से मानो मधुर पराग की वृष्टि हो रही है। जिस प्रकार मानव तन की छाया में अनिवार्य स्थिति रहती है, उसी प्रकार महादेवी के जीवन में भी छाया रूपी सुखों का संदेश प्रदान करने वाली मलयालम पर्वत की सुगंधित पवन प्रवाहित होती है। तात्पर्य यह है कि पीड़ा की अनुभूति के साथ-साथ वे अपने जीवन में सुख की प्राप्ति का अनुभव करती हैं।

मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल
चिंता का भार बनी अविरल
रज-कण पर जल कण हो बरसी,
नव जीवन-अंकुर बन निकली।

महादेवी जी कहती है कि आकाश में मेघमाला का प्रसार दूरवर्ती क्षितिज से प्रारंभ होता है। जिस प्रकार वह क्षितिज में धूमिल आकार धारण कर वह आती है, उसी प्रकार महादेवी जी भौरों रूपी क्षितिज पर उस समय चिंता का धूमिल प्रसार होता जा रहा है। वर्षा के बिंदु संसार की शुष्म धूलि को सरलता प्रदान कर जाते हैं और अनेक नये पौधों को विकास के लिए अंकुरित कर जाते हैं,। उसी प्रकार महादेवी जीभी सृष्टि की शुष्कता को अपनी मधुर संवेदनशील भावनाओं के योग से सरलता प्रदान करती है और मानव जीवन में नवीन सौंदर्य को अंकुरित करती रहती है।

पथ को न मलिन करता आना
पथ चिह्न न दे जाता जाना
सुधि मेरे आगन की जगत में
सुख की सिहरन हो अंत खिली।
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होता
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।

कवयित्री के अनुसार संसार में वर्षा ऋतु का आगमन शांत रूप से होता है और वह आगमन मार्ग को मलिन नहीं करता। जिस प्रकार आकाश में कोई अस्वच्छता शेष नहीं रहती हैं, उसी प्रकार करुणा की भावना से काव्य साहित्य का रूप विकृत अथवा दूषित नहीं होता। काव्य में रस की भावनाओं से साहित्य का रूप दूषित हो जाता है, परंतु करुणा की भावनाओं से काव्य साहित्य का रूप उज्ज्वल होता है। करुणा की भावना हृदय में उस प्रकार वासना अथवा कुसंस्कार नहीं छोड़ जाती है, जिस प्रकार शृंगार रस की अनुभूति हृदय में वासना छोड़ जाती है।

महादेवी जी के अनुसार जिस प्रकार बदली आकाश में आने की आशा से हृद, में एक हर्ष की तरंग खिल जाती है, उसी प्रकार करुणा की भावना की जागृति से हृदय, में एक सुख की लहर विकसित होती है। बदली आकाश के किसी एक ही कोने में नहीं रहती, वरन् आकाश में सर्वत्र विचरण करती रहती है। उसी प्रकार मेरे हृदय में करुण भावना किसी एक विशेष मानव वर्ग या किसी एक विशेष मानव वर्ग या राष्ट्र के प्रति नहीं है, परंतु विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति है।

कविता में करुणा की भावना रूपी बदली कहती है कि मेरा इतना ही परिचय और इतना ही इतिहास है कि कल से हृदय रूपी आकाश में उमड़ी और आज जन-मन-गण को हरा-भरा करके मिट चली हूं।

वर्तमान समाज में भी महादेवी वर्मा की बदली की जरूरत है, जो इस समाज से गंदगी को यानी भेदभाव, जातिभेद, अंधविश्वास आदि को धोकर साफ करे और इस समाज को नयी ऊर्जा से समृध करे और इस समाज की गर्भ से ऐसा संतान की उत्पति हो सके, जहां प्यार और शांति का वास हो सके। आज महादेवी वर्मा की तरह एक माता की समाज को जरूरत है, जो अपने नयनों में सौ-सौ जुगनू को समाकर समाज में ज्ञान की ज्योति फैला सके। आकाश में कवयित्री के अनुसार हजारों जल प्रवाह होते हैं, जो वर्षा के रूप में प्रवाहित रहती है। आज समाज को ऐसे महापुरुष चाहिए, जो समस्त जलप्रवाहों को अपने अश्रु में डालकर रो सके, ताकि पूरा संसार का

वेदना अपने आंखों से अश्रु रूप में बहा सके। संसार की दुख-वेदना को हल्का कर सके।

निष्कर्ष :

'नीर भरी दुख की बदली' महादेवीजी की प्रतिनिधि कविता है। प्रस्तुत कविता में महादेवीजी ने स्वयं को बदली के साथ रूपायित किया है। जिस प्रकार सागर का तप्त जल बदली के रूप में आकाश में छा जाती है और बरस कर व्यासी धरती की व्यास बुझाता है, उसी प्रकार कवयित्री की हृदया वुद्यि भी वेदना की अग्नि से तप्त मानव मन को शांति प्रदान करता है। जिस प्रकार बदली का गर्जन और तर्जन मन में आनंद-उल्लास को जन्म देता है, वैसे ही कविता बदली भी उतप्त मानव मन में एक दिव्य संगीत और आलोक को जन्म देती है।

जिस प्रकार आकाश में घनीभूत हुई बदली चुपचाप बरसकर चली जाती है, उसी प्रकार कवयित्री के हृदयाकाश में भी भावनाओं और अनुभूतियों के मेघ घनीभूत होते रहते हैं। वे सर संगीतों के रूप में बरस पड़ते हैं। उसका जीवन भी बदली की ांति अस्थायी है। जैसे बदली लोक कल्याण के लिए बरस कर मिट जाती है, उसी प्रकार कवयित्री का जीवन भी लोक कल्याण के लिए समर्पित है।

इस कविता में महादेवी वर्माजी ने स्वयं को 'नीर भरी दुख की बदली' के रूप में प्रस्तुत किया है। बदली के साथ अपना साय स्थापित करते हुए कवयित्री कहती है - जैसे सागर का तपता हुआ जल मेघों का रूप धारण कर आकाश में छा जाता है और फिर धरती का प्यास बुझाकर अपने को समाप्त कर देता है, उसी प्रकार कवयित्री के हृदय रूपी सागर से भी विरहाग्नि से तप कर काव्य-मेघ उठकर छा जाते हैं और तप्त मानव मन को शांति प्रदान करते हैं। मेघों की भांति उसका जीवन भी अल्पावधि है। अत: कवयित्री ने 'नीर भरी दुख की बदली' कह कर अपना परिचय दिया है। महादेवी जी के अनुसार बदली सदा शून्य आकाश में घिरती है। कवयित्री भी अपने प्रत्येक धड़कन में उसको (अनंत ब्रह्म) बसाये रहती है, जो सदैव निस्पंद-निर्विकार है। कवयित्री सदा इस विविध ताप पीड़ित जगत के जीवन को आनंदित और प्रसन्न बनाने की चेष्टा करती है। जैसे एक दीपक तिल तिल जल दूसरों को प्रकाश देता है, एक झरने की जलधारा दूसरों की प्यास बुझाती है, उसी प्रकार कवयित्री भी अपने नेत्र रूपी दीपकों से औरों के जीवन में आलोक विखेरती है और पलकों में बसे अश्रुजल से दूसरों के नीरस हृदय में करुणा का रस संचित करती रहती हैं।

जैसे बादल में ताप (बिजली) और शीतलता (जल) दोनों का संयोग होता है, उसी प्रकार कवयित्री के जीवन में भी विरह के ताप तथा करुणा की शीतलता का समन्वय है।

कवयित्री भी इस विराट सृष्टि में अकेली है। अपना संपूर्ण जीवन लोक कल्याण के लिए अर्पित कर देने के बाद भी उसे कोई व्यि€त या स्थान नहीं मिल पाता है, जिसे वह विश्वासपूर्वक अपना कह सके। कवयित्री का जीवन आकाश में छाई बदली की भांति क्षणिक है। उसने भी विश्व के जीवन में करुणा उत्पन्न करने के लिए जन्म लिया था, लेकिन आज इस विश्व से खाली हाथ जा रही है।

सभी सांसारिक संबंध एक मोहजाल है। व्यि€त अपने जीवन में जिनके साथ गहरे जुड़ा रहता है, मरणोपरांत वे ही उसे भूला देते हैं, फिर भी मनुष्य को चाहिए कि इस क्षणिक जीवन में लोक कल्याण के मार्ग से विमुख न हो।

संदर्भ ग्रंथ

क. महादेवी संचयिता - डॉ. निर्मला जैन

ख सांध्यगीत - महादेवी वर्मा

फ. मेरा परिवार - महादेवी वर्मा

ब. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य दुर्गा शंकर मिश्र

भ. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. श्रीनिवास शर्मा